Subject :- Sociology Date :- 15/05/2020
Class :- D-II (H) Paper :- 4th
Topic :- निदर्शन पद्धति एवं इसके प्रकार

By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari college, Darbhanga, 9507941619

①

Online study Material No :- (78)

प्रतिदर्श विधि / निदर्शन पद्धति या न्यादर्श पद्धति

सामाजिक अनुसंधान में निदर्शन पद्धति बहुत ही उपयोगी है। यदि किसी समूह का अध्ययन करने के लिए, हम कुछ इकाइयों का चयन करते हैं जिनमें समूह के गुणों का प्रतिनिधित्व हो, तो इसे हम निदर्शन पद्धति कहेंगे। सामाजिक अनुसंधान में मुख्य रूप से दो विधियों को अपनाया जाता है - जनगणना पद्धति और निदर्शन पद्धति। निदर्शन पद्धति में हम केवल चुनी हुयी इकाईयों का अध्ययन करते हैं, जो समूह की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हो। अध्ययन की इस विधि को ही निदर्शन विधि कहते हैं।
Sample का चुनाव करना ही Sampling कहलाता है।

परिभाषाएँ

Goode & Hatt के अनुसार, "एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्ट है, एक विस्तृत समूह का अपेक्षाकृत छोटा प्रतिनिधि है।"
फ्रेंक येट्स के शब्दों में, "निदर्शन शब्द इकाईयों के एक समूह या सम्पूर्ण सामग्री के एक अंश के लिए सुरक्षित होना चाहिए, इस विश्वास के ऊपर चुना गया है कि वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधि होगा।"
P.V. Young के अनुसार, "एक सांख्यिकी निदर्शन उस सम्पूर्ण अथवा योग का एक अति लघु चित्र है जिसमें से निदर्शन लिया गया है।"
Bogardus के शब्दानुसार, "निदर्शन पूर्व निर्धारित योजनानुसार इकाईयों के समूह में से एक निश्चित प्रतिशत का चुनाव करना है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि निदर्शन पद्धति द्वारा हम चुनी इकाईयों के आधार पर सम्पूर्ण का निष्कर्ष निकालते हैं। इस आधार पर निदर्शन सम्पूर्ण सामग्री का एक प्रतिनिधि अंश हो और उसका स्वरूप समग्र के अनुपात में छोटा हो। इस प्रकार निदर्शन अध्ययन हेतु समग्र से चुनी हुयी वह इकाई है जो प्रत्येक दृष्टिकोण से समग्र का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रकार

Scanned with CamScanner

1. दैव निदर्शन → दैव निदर्शन वह निदर्शन पद्धति है जिसमें समग्र की प्रत्येक इकाई के चुने जाने के समान अवसर होते हैं। इस विधि में अनुसंधानकर्ता का झुकाव किसी इकाई विशेष के चुनाव की तरफ नहीं होता वरन् चुनाव की सम्पूर्ण प्रक्रिया दैव एवं संयोग पर छोड़ दी जाती है। इसलिए ही इसे दैव निदर्शन कहते हैं।

2. उद्देश्यपूर्ण या सविचार निदर्शन → जब अनुसंधानकर्ता जानबूझ कर किसी विशिष्ट उद्देश्य से समग्र में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों का चुनाव करता है तो उसे उद्देश्यपूर्ण अथवा सविचार निदर्शन कहते हैं। इस निदर्शन पद्धति में अनुसंधानकर्ता अपने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये उन्ही इकाईयों का चयन करता है जो क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करती हो।

3. स्तरित या वर्गीकृत निदर्शन → जब अनुसंधानकर्ता समग्र की सभी इकाईयाँ सजातीय न हो। जिन इकाईयों के लक्षण समान हो, उन्हे एक वर्ग के अन्तर्गत रख लिया जाता है। तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ग में से निश्चित मात्रा में निदर्शन चुन लिया जाता है।

4. बहुस्तरीय निदर्शन → यह विधि का प्रयोग बड़े क्षेत्र से निदर्शन निकालने के लिए किया जाता है। चूँकि इस पद्धति में निदर्शन का चुनाव कई स्तरों से गुजरने के बाद किया जाता है, इसलिए इसे बहुस्तरीय निदर्शन पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति में स्तरीत निदर्शन विधि एवं दैव निदर्शन विधि दोनों का प्रयोग किया जाता है। यदि सावधानीपूर्वक इसका प्रयोग किया जाए तो इसमें दोनो के लाभ प्राप्त हो सकते हैं तथा कम इकाईयों से ही अधिकाधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त किया जा सकता है।

5. सुविधाजनक निदर्शन → सुविधाजनक निदर्शन पद्धति में निदर्शन का चुनाव अध्ययनकर्ता की सुविधानुसार किया जाता है। इस विधि का प्रयोग तब किया जाता है जब समग्र पूर्णतयास्पष्ट न हो, जब निदर्शन की इकाईयाँ स्पष्ट न हो तथा जब स्रोत सूची अप्राप्त हो। यह विधि सरल, मितव्ययी, गहन अध्ययन एवं यथार्थ निदर्शन की संभावना के गुण रखती है।

6. स्वयं चयनित निदर्शन → कई बार निदर्शन का चुनाव नहीं किया जाता वरन् सम्बन्धित व्यक्ति स्वयं ही निदर्शन में सम्मिलित होने के प्रस्ताव करता है। इसलिए इसे स्वयं चयनित निदर्शन कहते हैं। उदाहरणार्थ - किसी पत्र-पत्रिका, समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन आदि पर अपना प्रचार कर उत्तरदाता का अभिमत प्राप्त करता है, उसे ही स्वयं चयनित निदर्शन पद्धति कहते हैं।

7. क्षेत्रीय निदर्शन → इस निदर्शन प्रविधि में समग्र को पहले छोटे-छोटे

Scanned with CamScanner

क्षेत्रों में विभाजित करते हैं तत्पश्चात् सम्पूर्ण क्षेत्र का ही अध्ययन किया जाता है, क्योंकि इसमें इकाईयों के एक समूह का अध्ययन किया जाता है, इसलिए इसे संभाग निदर्शन (cluster sampling) भी कहते हैं।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U